(Gold Exchange Standard)

स्वर्ण - विनिमय मान मे देश की मुद्रा प्रत्यक्ष रूप से स्वर्ण से सम्बद्धित नही की जाती, ऐसे देश की मुद्रा से सम्बद्धित की जाती थी जो स्वर्ण मे परिवर्तित रहती है।
सरकार देश की मुद्रा को स्वर्ण मे नही परिवर्तित कर एक ऐसे देश की मुद्रा मे परिवर्तित करती है जिसके बदले मे स्वर्ण प्राप्त किया जा सकता है।
मौद्रिक प्रणाली मे देश की मुद्रा परोक्ष रूप से स्वर्ण मे परिवर्तित होती है।
परिणामस्वरूप देश 'क' के स्वर्ण कोष का महत्वपूर्ण भाग दूसरे देश 'ख' के केन्द्रीय बैंक के पास जमा रहता है।
भारत मे 1898 से 1917 तक तथा 1927 से 1931 तक स्वर्ण - विनिमय मान का ही प्रचलन था।
स्वर्ण - विनिमय मान की निम्नलिखित विशेषताएँ है।
(क) स्वर्ण - विनिमय मान मे पत्र-मुद्रा ही देश की प्रामाणिक मुद्रा होती है। स्वर्ण विनिमय मान मे देश मे स्वर्ण - मुद्रा प्रचलन मे नही रहती।
(ख) देश की प्रामाणिक मुद्रा पत्र - मुद्रा होती है जो एक निश्चित दर पर किसी दूसरे देश की मुद्रा मे परिवर्तनीय होती है जो स्वर्ण से सम्बद्धित रहती है
देश की मुद्रा का स्वर्ण के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही रहता —

इस प्रणाली मे देश की मुद्रा सीधे स्वर्ण से नही संबंधित हो कर एक ऐसे देश की मुद्रा से संबंधित कर दी जाती है, जहाँ स्वर्ण प्रमाण मान का प्रचलन रहता है।

Scanned with CamScanner

(ग) विदेशी मे स्वर्ण-कोष रखना पड़ता है →
इस प्रणाली मे सरकार या केन्द्रीय बैंक को विदेशी मे स्वर्ण-कोष रखना पड़ता है जिसके आधार पर यह प्रणाली प्रचलित रहती है।

(घ) स्वर्ण का आयात एवं निर्यात मुक्त नही रहता →
इस प्रणाली मे सरकार अपनी सुविधानुसार स्वर्ण के आयात एवं निर्यात को व्यवस्थित करती है यानी इसमे स्वर्ण के आयात एवं निर्यात पर प्रतिबन्ध रहता है।

स्वर्ण-विनिमय मान के निम्नांकित लाभ है।

1. स्वर्ण के मौद्रिक उपयोग मे बचत :→
स्वर्ण-विनिमय मान का सर्वप्रथम लाभ यह था कि इसके अंतर्गत स्वर्ण के मौद्रिक व्यवहार मे बचत होती थी स्वर्ण की माँग मे वृद्धि होने तथा उसकी पूर्ति मे इस अनुपात मे वृद्धि नही होने से बराबर मुद्रा-स्फीति का भय बना रहता जिसका समाज के लिए बड़ा ही भयावह परिणाम होगा।

2. देश की मौद्रिक व्यवस्था पर मौद्रिक कोष का कोई प्रभाव नही पड़ता :→
स्वर्ण विनिमय मान मे देश की मौद्रिक व्यवस्था पर मौद्रिक कोष का बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है; अंतर्राष्ट्रीय भुगतान अंतर्राष्ट्रीय कोष से किया जाता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रणाली में स्वर्ण के आयात - निर्यात की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।
विदेशों में रखे गए स्वर्ण - कोष पर सरकार को ब्याज भी मिलता है जिससे लाभ ही लाभ है।

3. स्वर्ण विनिमय मान बहुत ही लोचदार होता है — इस मान में मुद्रा का प्रसार स्वर्ण की मात्रा पर निर्भर नहीं करता अतएव सरकार या मौद्रिक अधिकारी संकट काल में आवश्यकतानुसार मुद्रा भी जारी कर सकते हैं। स्वर्ण विनिमय मान बहुत ही लोचदार होता है।

4. स्वर्ण - विनिमय मान को निर्धन एवं अविकसित राष्ट्र जिनके पास स्वर्ण बहुत कम मात्रा में उपलब्ध है भी अपना सकते हैं ⟶
स्वर्ण के सिक्के चलाये बगैर ही स्वर्ण-मान के प्रायः सभी लाभ उठाये जा सकते हैं। भारत जैसे निर्धन एवं अविकसित राष्ट्र के लिए भी यह पद्धति बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है।

स्वर्ण - विनिमय मान के निम्नांकित दोष भी हैं।

1. स्वर्ण - विनिमय मान का प्रमुख दोष यह है कि एक ही स्वर्ण - कोष के आधार पर दो या दो से अधिक देशों की मुद्राएँ आधारित रहती हैं ⟶
इससे यह मान मिथ्यापितापूर्ण तो अवश्य होता है, इस बात की भी आशंका बराबर बनी रहती है कि स्वर्ण की यह सीमित मात्रा स्वर्ण - विनिमय मान के सभी कार्यों को सम्पादन करने में कहीं अपर्याप्त न सिद्ध हो। सर्वाधिक प्रमुख दोष है।

Scanned with CamScanner

2. देश की मौद्रिक व्यवस्था विदेशी मौद्रिक व्यवस्था पर आधारित होती है ⟶

मौद्रिक व्यवस्था के सम्बन्ध में स्वतन्त्रता नहीं रह जाती है। देश की मौद्रिक नीति केन्द्रीय देश की मौद्रिक नीति पर अवलम्बित हो जाती है। केन्द्रीय देश स्वर्ण-प्रमाप का परित्याग कर दे तो स्वर्ण-विनिमय मान वाले देश के भी स्वर्ण-विनिमय मान वाले देश को भी स्वर्ण-विनिमय मान का परित्याग करना ही पड़ेगा।

3. स्वर्ण-विनिमय मान स्वयं-संचालक मान नहीं है: ⟶ संचालन बहुत कुछ मौद्रिक अधिकारियों की इच्छा पर निर्भर करता है। पर्याप्त मात्रा में लोच भी नहीं पायी जाती है। देश में मुद्रा-प्रसार में कोई कठिनाई नहीं होती। इन दोषों के बावजूद किसी निर्यात देश जिसके पास स्वर्ण-कोष का अभाव है, को अपनी विदेशी विनिमय-दर को स्थायी रखने के लिए स्वर्ण-विनिमय मान के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं रह जाता।

4. स्वर्ण-निधि मान: ⟶

स्वर्ण-निधि मान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विनिमय कोषों की स्थापना की जाती है। 1936 से 1939 के बीच इस पद्धति को बेल्जियम, फ्रांस, स्विट्जरलैंड और अमेरिका आदि देशों में अपनाया गया था। विनिमय-दरों की स्थिरता के लिए आपस में एक समझौता किया था जिसके आधार पर एक नवीन मुद्रा प्रणाली अपनायी गयी थी।

Scanned with CamScanner